जर्बेरा की खेती एवं प्रबंधन

[1]मोहित चौधरी और [2]ज्योति वर्मा

[1]पीएचडी, उद्यान विभाग, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश: 250110

[2]पीएचडी, पुष्प विज्ञानं एवं भूदृश्य निर्माण विभाग, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना: 141004

[1]कोर्रेसपोंडिंग लेखक: chaudhary-mohit100@gmail-com

परिचय

जरबेरा अंतरराष्ट्रीय बाजार में बिकने वाले शीर्ष दस कर्तित पुष्पों में पांचवें स्थान पर है। ये मैदानी इलाकों, निचली और मध्य पहाड़ियों के नीचे संरक्षित खेती के लिए उपयुक्त हैं। घरेलू बाजार में व्यापार का अनुमान 985 करोड़ रुपये है। जर्बेरा के फूल गुलदस्ता बनाने एवं सजावट के लिए उपयुक्त होते हैं। यह एस्टरेसिया कुल से संबंधित है। फूलों के सिर के आधार पर, उन्हें सिंगल, डबल और सेमी–डबल किस्मों में बांटा गया है। व्यावसायिक रूप से सेमी–डबल्स को अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

इंटेंस

डाना एलेन

ड्यून

स्टेंजा

आर्टसि्ट

व्हाइट हाउस

मृदा

मृदा का पीएच 5.5 से 6.5 के बीच होना चाहिए एवं पोषक तत्वों के अवशोषण में अधिकतम दक्षता प्राप्त करने के लिए इसे इस स्तर पर बनाए रखना चाहिए। जड़ों की बेहतर वृद्धि के लिए मिट्टी अत्यधिक झरझरी, अच्छी तरह से सूखी हुई एवं उचित जल निकास का प्रबंध हो।

जलवायु

जर्बेरा के पौधों की अच्छी पैदावार, विकास और फूल उत्पादन के लिए दिन का तापमान 22 से 30 डिग्री सेलसियस और रात का तापमान 12 से 16 डिग्री सेलसियस तक उपयुक्त है। अतिरिक्त प्रकाश और तापमान को नियंत्रित करने के लिए छाया जाल (50%) का उपयोग किया जा सकता है साथ ही 60 प्रतिशत आर्द्रता बनाए रखना जर्बेरा की खेती के लिए उपयुक्त है।

प्रवर्धन

ऊतक संवर्धन विधि जर्बेरा की पौध सामग्री को तैयार करने के लिए सर्वोत्तम विधि है। इस विधि द्वारा जर्बेरा का पौधा शूट टिप, फ्लावर बड इत्यादि भागों द्वारा तैयार किया जाता है।

क्यारी की तैयारी

खेत की 2 से 3 बार गहरी और अच्छे से जुताई कर लेनी चाहिए। 45 से.मी ऊंचाई, 60 से.मी चौड़ाई और सुविधाजनक लंबाई की उठी हुई दो क्यारियों के बीच 30 सेमी का मार्ग छोड़कर खेत तैयार किया जाना चाहिए। जर्बेरा की खेती शुरू करने से पहले, मिट्टी को कीटाणुरहित करना अति आवश्यक है ताकि मिट्टी जनित रोगजनकों जैसे फाइटोफ्थोरा, फुसैरियम और पाइथियम के संक्रमण को कम किया जा सके जो अन्यथा फसल को पूरी तरह से नष्ट कर सकते हैं।

खेत एवं क्यारी तैयार करने हेतु मिश्रण

सामग्री	मात्रा
लाल मिट्टी	55%
रेत	15%

खाद	30 %
धान भूसी	4 कि. ग्रा . प्रति वर्ग मीटर

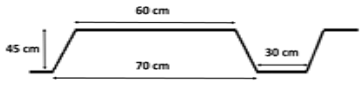

विसंक्रमण

फॉर्मेलिन/7.5 –10 लीटर प्रति 100 मीटर वर्ग :– इस रसायन को 10 गुना पानी में घोलकर क्यारियों पर छिड़काव करना चाहिए और फिर 7 दिनों के लिए प्लास्टिक से ढक देना चाहिए। इसके पश्चात लगभग 100 लीटर पानी के साथ प्रति वर्ग मीटर क्षेत्र की मिट्टी को बहा दें। स्टरलाइज करने और मिट्टी को बहानेध्धोने के उपरांत पौधरोपण करने से पहले 2 सप्ताह तक प्रतीक्षा करें ।

पौधरोपन

जर्बेरा का पौधरोपन जनवरी से मार्च और जून से अगस्त, साल में दो बार किया जा सकता है । उठी हुई क्यारियों में जर्बेरा उगाने से जल निकासी और वातन में सुधार होता है। जर्बेरा के पौधे लगाते समय पौधों के क्राउन को मिट्टी के स्तर से 1–2 सेंटीमीटर ऊपर होना चाहिए। वातन के लिए हर पंद्रह दिन में चारों ओर की मिट्टी की निराई करें।

पोषण

पौधों की अच्छी वृद्धि हेतु पौधरोपण के तीन सप्ताह के बाद घुलनशील एनः पीः के 1:1:1 (उदाहरण 19:19:19)/0. 4 ग्राम प्रति पौधा 1.5 mS/cm इ. सी. के साथ एक दिन छोड़ कर पहले तीन महीनों के लिए छिडकाव करें। सिंचाई पौधरोपन के तुरंत बाद और उसके बाद नियमित रूप से ड्रिप सिंचाई प्रणाली के माध्यम से पर्याप्त सिंचाई प्रदान करनी चाहिए। मौसम और अवस्था के अनुसार जर्बेरा के पौधों को पानी की औसत आवश्यकता लगभग 500–700 मि.ली प्रति पौधा प्रति दिन (4.5 से 6 लीटर प्रति वर्ग मीटर) होती है। पानी की गुणवत्ता इस प्रकार होनी चाहिएः–

1. पी० एच – 6.5–7
2. इ. सी. – <0-7 mS/cm
3. टी०डी०एस० <450 ppm
4. पानी की कठोरता < 200 ppm

जर्बेरा के विकार

फूल का मुड़ना : – कोशिका की तीक्ष्णता और पोषण की कमी के कारण (कैल्शियम की कमी)

जर्बेरा के फूल का समय से पहले मुरझानाः – बादल छाए रहने के बाद तेज धूप या कार्बोहाइड्रेट की कमी के कारण।

द्विमुखी जर्बेरा फूल :– पोषक तत्वों के असंतुलन के कारण होने वाला एक शारीरिक विकार। बहुत अधिक वृद्धि या बहुत कम फूल की कलियाँ।

तने की छोटी लंबाईः – उच्च लवणता स्तर, कम या ज्यादा नमी, मिट्टी का कम तापमान

खोखला तनाः – बादल के मौसम में अपर्याप्त धूप, जिससे स्लीवस में पैकिंग के समय कार्बोहाइड्रेट जमा नहीं हो पाता है।

पुष्प की कटाई एवं उपज

1. जर्बेरा लगभग तीन महीने की अवधी में फूल देना शुरू कर देता है। ग्रीनहाउस के तहत प्रति वर्ष औसत उपज लगभग 250–270 फूल प्रति मीटर वर्ग है। डिस्क फ्लोरेट्स की बाहरी 2–3 पंक्तियाँ डंठल के लंबवत होने पर इसकी कटाई की जाती है ।
2. फूलों को सुबह या देर शाम या दिन में जब तापमान कम हो तब तोड़ें।
3. फूल को काटने के बजाय पौधे से तोड़ लें।
4. फूल तोड़ने के उपरांत फूल के डंठल को कोणीय आकार में काट दें।
5. फूलों को तोड़ने के उपरांत तत्काल रूप से 2 से 3 से ० मी० पानी की गहराई में 14 से 15 डिग्री सेलसियस के तापमान मे चार घंटे के लिए रखें।
6. प्रत्येक फूल को 4.5" X 4.5 " के पॉलीथिन स्लीव बैग में रखें।
7. 10–10 फूलों का बंडल बनाए ।
8. समान्य रूप से २५० से ३०० फूल एक डिब्बे में पैक किए जाते हैं ।
9. डंठल की लंबाई 45–55 से० मी०

10. फूल का व्यास 10–12 से० मी०

11. जर्बेरा के फूल न्यूनतम 08 से 10 दिन तक फूलदान में रह सकते है।

रोग नियंत्रण

क्र.स.	रोग	नियंत्रक	मात्रा (प्रति लीटर)
1	रूट रोट	बेनोमाइल	3 ग्राम
		कैप्टान/कार्बन डाजीन	2 ग्राम
2	क्राऔन रोट	कौपर ओकसिकलोराइड	1.5 ग्राम
		कौपर हाइड्रोक्साइड	2 ग्राम
3	पाउडरी मिलड्यू	वेटबल सलफर	1.5 ग्राम
		डिनोकेप	0.4 ग्राम
4	ब्लाईट (ब्रोट्राइटिस)	मेंकोजेब	1.5 ग्राम
		इपरोडाइन.	
		कार्बन डाजीन	0.5 ग्राम

कीट नियंत्रण

क्र.स.	कीट	कीट नियंत्रक	मात्रा (प्रति लीटर)
1	व्हाइट फ्लाई	एमिडक्लोराईड	0.5 मि०ली०
		डाइफेन्थ्योरोन	1.25 ग्राम
		असिट्टामाप्राइड	0.5 ग्राम
2	लीफ माइनर	एसिफेट	1.5 ग्राम
		डाइक्लोरोवोस	1 मि०ली०
3	थ्रिप्स	फिप्रोनिल	1.5 मि०ली०
		एमिडक्लोराईड	0.5 मि०ली०
4	लाल मकड़ी	डाइकोफोल	1.5 मि०ली०
		एबेमेक्टिन	0.4 मि०ली०
5	केटरपिलर	मिथोमाइल	1.5 ग्राम
		फोरेट	2 ग्राम प्रति पौधा
		डेल्टामेथ्राइन	0.5 मि०ली०

नोट :–

पीले स्टिकी ट्रैप और ब्लू स्टिकी ट्रैप को क्रॉप कैनोपी लेवल पर रखा जा सकता है। प्रति 1000 वर्ग फीट में एक से तीन स्टिकी कार्ड रखे जा सकते हैं और उन्हें नियमित रूप से बदलते रहना चाहिए।